‘तिमिरांचल से आलोक तक’

लेखकः- अमन शुक्ला

कालो हि सकृदभ्येति यं नरं कालकांक्षिणम्।

दुर्लभः स पुनस्तस्य कालः कर्माणि साधनतः॥

भावार्थः-

जब व्यक्ति को जीवन में संघर्ष या सही मार्ग का चुनाव करना हो, तो समय का महत्व सबसे बड़ा होता है। सही अवसर जीवन में केवल एक बार दस्तक देता है। यदि उस सटीक क्षण पर निर्णय न लिया जाए, तो वह समय और अवसर दोबारा लौटकर नहीं आता, जिससे पूरा संघर्ष व्यर्थ हो सकता है।

प्रस्तावना

'संघर्ष का चुनाव समय पर कर पाना,' आज एक लोकप्रिय समस्या बन चुकी है। मेरी यह कृति इसी दुविधा का समाधान और संघर्ष के चुनाव में समय की महत्ता को समझाती है।

कल्पना मात्र से ही यदि भविष्य का निर्माण संभव होता तो स्वयं ईश्वर मृत्यु लोक में संघर्षमयी जीवन का उदाहरण प्रस्तुत न करते। यदि यह संभव होता तो कभी भी महामहीम भीष्म युद्ध न होने देते; भगवान श्री कृष्ण जी के अनुसार उन्होंने कल्पना तो की परन्तु सही निर्णय लेने में देर कर दी थी। यदि उनकी प्रतिज्ञा को ध्यान से समझा जाए तो वह धृतराष्ट्र की रक्षा की बाध्यता की थी, दुर्योधन की नहीं। उनके इसी तथ्य को समझने में देरी और समाज के दृष्टिकोण के भय ने मानव इतिहास का सबसे बड़ा नरसंहार कराया।

ठीक इसी प्रकार जीवन में अपने तथ्यों को समझकर निर्णय की देरी ही एक अन्धकारमयी भविष्य के निर्माण का कारण बनती है। समाज का दृष्टिकोण जय पराजय के अनुसार परिवर्तनशील होता है।

दो छात्र एक साथ किसी सरकारी विभाग की नौकरी के लिए तैयारी शुरू करते हैं, उनमें से एक का चयन हो गया; तो समाज ने उसे अपना आदर्श बना दिया जबकि वह कई विकारों से युक्त है। दूसरा छात्र विकारहीन है परन्तु उसकी परिस्थितियों के कारण चयनित नहीं हुआ तो समाज ने उसके ऊपर लाल्छन लगाना शुरू कर दिया। अन्ततः उसको विकार युक्त ठहरा दिया।

समाज के इसी दोहरे दृष्टिकोण के सम्बन्ध में मेरी कविता प्रकाश डालती है।

"मैं अपने पाठकों से अनुरोध करुंगा कि मेरी कृति को पढ़ने के बाद आपका अपने जीवन में संघर्ष का चुनाव समय पर करने से ही इसकी सार्थकता है।"

-: धन्यवाद :-

युद्ध का कोई विकल्प नहीं,

आज नहीं तो कल सही।

आज लड़ा तो वैभव पाएगा,

कल लड़ा तो ठोकरों में रह जाएगा।।१।।

“संघर्ष से भागना समस्या का समाधान नहीं है। सही समय पर पूरी ताकत से किया गया प्रहार ही मनुष्य को इतिहास में अमर और वैभवशाली बनाता है।”

प्रमाण:- महाभारत के उद्योग पर्व से विदुला-संवाद का यह प्रसिद्ध श्लोक-

उत्तिष्ठ हे कापुरुष मा शेष्वैवं पराजितः।

अमित्रानन्दयन सर्वान् निर्मानो बन्धुशोकदः॥

उद्विजेतैव संशयात् श्रेयः कुर्याद् ध्रुवं न तु।

मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं चिरम्॥

अर्थ:- हे कायर पुरुष! उठो, इस प्रकार पराजित होकर (हताश होकर) मत पड़े रहो। इस तरह कायरों की भाँति पड़े रहकर तुम अपने सभी शत्रुओं को आनंदित कर रहे हो, अपना मान-सम्मान खो चुके हो और अपने बंधु-बांधवों (परिवार) को केवल शोक और दुःख दे रहे हो। मनुष्य को संशय

(डर या अनिश्चितता) से ऊपर उठना चाहिए। उसे केवल वही कर्म करना चाहिए जिससे निश्चित रूप से कल्याण (श्रेय) हो, न कि असमंजस में बैठकर समय नष्ट करना चाहिए।

क्षण भर के लिए (मशाल की तरह) प्रचंडता से जल जाना कहीं बेहतर है, बजाय इसके कि जीवन भर धुएँ की तरह सुलगते (तड़पते और डरते) रहें।

व्याख्या: जब अन्याय या संकट चरम पर हो, तो शांति के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं। ऐसे में संघर्ष अपरिहार्य (Unavoidable) हो जाता है। आप युद्ध से भाग नहीं सकते, आज नहीं तो कल उसका सामना करना ही पड़ेगा। यदि व्यक्ति वर्तमान में पूरे साहस के साथ सही समय पर शत्रु या परिस्थिति से टकरा जाता है, तो वह विजय और वैभव (गौरव) को प्राप्त करता है। इतिहास केवल उन्हीं का सम्मान करता है जो समय पर खड़े होते हैं।यदि कोई व्यक्ति डर के मारे आज संघर्ष को टाल देता है और सोचता है कि वह कल लड़ेगा, तो वह अपना आत्मसम्मान खो देता है। समय बीत जाने पर मजबूरी में लड़ा गया युद्ध केवल हार और अपमान (ठोकरें) लेकर आता है।

निर्णय तेरा है; क्या करके जाएगा?
यादों में अमर रहेगा या फिर,
गुमनामी में खो जाएगा।
दुनिया को कोई फर्क नही,
तू गलत है या सही।।२।।

यह पद मनुष्य के **व्यक्तिगत उत्तरदायित्व (Personal Responsibility)**, कर्म के चुनाव और संसार की निष्ठुर वास्तविकता को दर्शाता है। यह संदेश देता है कि इतिहास में अमर होना या गुमनामी के अंधेरे में खो जाना पूरी तरह व्यक्ति के अपने निर्णय पर निर्भर करता है, क्योंकि यह संसार किसी की मजबूरी या सही-गलत की परवाह नहीं करता; वह केवल परिणाम देखता है।

इस गहरे दार्शनिक और व्यावहारिक भाव को समझाने के लिए **श्रीमद्भगवद्गीता** और **भर्तृहरि के नीतिशतकम्** के श्लोक सबसे सटीक उदाहरण हैं:-

१: कर्म और निर्णय की स्वतंत्रता (गीता ६.५)

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

अर्थ: मनुष्य को अपने द्वारा अपना उद्धार करना चाहिए, अपने आपको नीचे नहीं गिराना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु है।

२: गुमनामी बनाम कीर्ति (नीतिशतकम्)

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।

नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥

अर्थ: वे पुण्यात्मा लोग धन्य हैं जिनके 'यश रूपी शरीर' (यादों और कीर्ति) को कभी बुढ़ापे या मृत्यु का भय नहीं होता। वे हमेशा अमर रहते हैं।

पद और श्लोक की संयुक्त व्याख्या

१. "निर्णय तेरा है; क्या करके जाएगा? यादों में अमर रहेगा या फिर, गुमनामी में खो जाएगा।"

व्याख्या: जीवन हर व्यक्ति को एक कोरा कागज़ देता है। आप अपने कर्मों से उस पर इतिहास लिखते हैं या उसे खाली छोड़ देते हैं, यह पूरी तरह आपका निजी फैसला है। जो लोग समाज और राष्ट्र के लिए बड़े संकल्प लेते हैं, वे मृत्यु के बाद भी लोगों की यादों में अमर रहते हैं। जो केवल अपने स्वार्थ में जीते हैं, उन्हें समय का चक्र गुमनामी के अंधेरे में ढकेल देता है।

श्लोक का संबंध: गीता का श्लोक (*"उद्धरेदात्मनात्मानं"*) सीधे तौर पर 'निर्णय तेरा है' की पुष्टि करता है। भगवान कृष्ण कहते हैं कि तुम्हारी नियति कोई और तय नहीं करेगा। तुम खुद को अमरता की ओर ले जाते हो या गुमनामी के गर्त में गिराते हो, इसके जिम्मेदार तुम खुद हो।

२. "दुनिया को कोई फर्क नही, तू गलत है या सही।"

व्याख्या: यह संसार अत्यंत व्यावहारिक और परिणाम-केन्द्रित (Result-oriented) है। जब आप संघर्ष कर रहे होते हैं या असफल होते हैं, तो दुनिया को इस बात से कोई सरोकार नहीं होता कि आपकी नीयत कितनी सही थी या परिस्थितियाँ कितनी गलत थीं। दुनिया केवल आपकी सफलता, आपके साहस और आपके अंतिम परिणाम को देखती है। आपके रोने या खुद को सही साबित करने से दुनिया की रफ्तार नहीं रुकती।

श्लोक का संबंध: नीतिशतकम् का श्लोक स्पष्ट करता है कि दुनिया केवल *'सुकृतिनो'* (सफल और श्रेष्ठ कर्म करने वालों) का ही जयगान करती है। यदि आप गुमनाम रह गए, तो दुनिया आपके 'सही' होने का प्रमाण पत्र ढूँढने नहीं आएगी। आपको अपने यश का निर्माण खुद अपने पुरुषार्थ से करना होगा।

निष्कर्ष:- आपका यह पद मनुष्य को आत्म-मंथन की प्रेरणा देता है। यह याद दिलाता है कि संसार की परवाह किए बिना, व्यक्ति को स्वयं आगे बढ़कर अपने भाग्य का निर्माता बनना होगा।

पूछेंगी जगती सारी -
'कहां गया तेरा पौरुष भारी?'
प्रश्न यही खड़ा होगा -
'कहां है विजय की लाली?'।।३।।

यह पद अकर्मण्यता, पराजय और कायरता के बाद मिलने वाले सामाजिक अपमान और आत्मग्लानि को दर्शाता है। यह संदेश देता है कि यदि कोई व्यक्ति संघर्ष के समय साहस (पौरुष) नहीं दिखाता, तो अंत में पूरा समाज और आने वाली पीढ़ियाँ उससे उसकी असफलता और कायरता पर तीखे सवाल पूछती हैं। तब व्यक्ति के पास लज्जा के अलावा कुछ नहीं बचता।

इस अत्यंत गंभीर और व्यावहारिक भाव को समझाने के लिए श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के द्‌वितीय अध्याय (सांख्ययोग) से भगवान श्रीकृष्ण का अर्जुन को दिया गया यह प्रसिद्‌ध उपदेश:-

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते॥ (गीता २.३४)

शब्दार्थ और श्लोक का अर्थ

अकीर्तिं चापि भूतानि: सभी लोग (संसार) तुम्हारी अपकीर्ति (निंदा या बदनामी) का गान करेंगे।
कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्: वह अपकीर्ति बहुत लंबे समय तक (युगों-युगों तक) समाज में कही जाएगी।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्: एक सम्मानित या सामर्थ्यवान व्यक्ति के लिए अपकीर्ति और बदनामी,
मरणादतिरिच्यते: मृत्यु से भी बढ़कर (ज्यादा दुखद और कष्टदायक) होती है।
पद और श्लोक की संयुक्त व्याख्या

१."पूछेंगी जगती सारी - 'कहां गया तेरा पौरुष भारी?"
व्याख्या: जब कोई व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में हथियार डाल देता है या संघर्ष से पीछे हट जाता है, तो यह 'जगती सारी' (पूरा संसार) उस पर उंगली उठाती है। लोग पूछते हैं कि जो व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातें करता था, जिसका सामर्थ्य इतना बड़ा माना जाता था, संकट आने पर उसका वह 'भारी पौरुष' (वीरता और साहस) कहाँ गायब हो गया?
श्लोक का संबंध: भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से यही कहते हैं कि हे अर्जुन! यदि तुम युद्ध छोड़कर भाग गए, तो 'भूतानि कथयिष्यन्ति' यानी आने वाली पीढ़ियाँ और यह समाज तुम्हारी कायरता की कहानियाँ सुनाएगा। लोग कहेंगे कि अर्जुन जैसा महान धनुर्धारी समय आने पर रणभूमि से भाग गया। यह सामाजिक अपमान जीवन भर सालता रहेगा।

२. "प्रश्न यही खड़ा होगा - 'कहां है विजय की लाली?"

व्याख्या: संसार केवल अंतिम परिणाम देखता है। अंत में समाज आपसे केवल एक ही सवाल पूछेगा कि तुम्हारे संघर्ष का नतीजा क्या निकला? तुम्हारी 'विजय की लाली' (जीत की चमक या सफलता का गौरव) कहाँ है? यदि आपके पास दिखाने के लिए विजय नहीं है, तो आपकी सारी दलीलें और बहाने बेकार हो जाते हैं।

श्लोक का संबंध: श्रीकृष्ण आगे समझाते हैं कि 'सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते'–एक प्रतिष्ठित और वीर पुरुष के लिए इस तरह का अनुत्तरित प्रश्न और समाज में होने वाली बदनामी, साक्षात मृत्यु से भी बदतर होती है। सम्मान खोकर, समाज के तीखे प्रश्नों के तीर सहते हुए जीना, मरने से भी अधिक कष्टकारी है।

निष्कर्ष

यह तीसरा पद मनुष्य को सचेत करता है कि "आज का प्रमाद या कायरता, कल के शाश्वत अपमान का कारण बनती है।" यदि आप आज समाज के सामने सिर उठाकर जीना चाहते हैं, तो आपको अपने पौरुष को सिद्‌ध करना होगा और विजय की लाली को हासिल करना होगा, अन्यथा दुनिया के तीखे प्रश्न आपको जीने नहीं देंगे।

उस पराभव के क्षण में,
तू वाग्विहीन हो जाएगा।
तब ये ज़माना सारा,
तुझे कायर ठहराएगा।
तेरी कंटकाकीर्ण राहें,
तब कोई न देख पाएगा।।४।।

ये सुंदर और प्रेरणादायक पंक्तियाँ जीवन के सबसे कठिन संघर्ष, असफलता (पराभव) के क्षण और उसके प्रति संसार के दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। यहाँ कवि कह रहे हैं कि जब तुम हार जाओगे, तब तुम अपनी बेगुनाही या संघर्ष को साबित करने के लिए निशब्द (वाग्विहीन) हो जाओगे। दुनिया तुम्हारी कठिनाइयों (कंटकाकीर्ण राहों) को नहीं देखेगी, बल्कि तुम्हें कायर मान लेगी।

इस भाव को गहराई से समझने के लिए इसकी व्याख्या और इसके समान अर्थ रखने वाले प्रसिद्ध संस्कृत श्लोक नीचे दिए गए हैं:

1. पद की विस्तृत व्याख्या (Explanation)

पराभव और मौन: जब व्यक्ति असफल होता है, तो उसका आत्मविश्वास डगमगा जाता है। वह समाज के तानों के सामने चुप (वाग्विहीन) हो जाता है क्योंकि संसार केवल सफलता की भाषा समझता है।

दुनिया का नजरिया (ज़माना सारा): यह कड़वी सच्चाई है कि दुनिया केवल परिणाम (Result) देखती है, प्रयास (Effort) नहीं। हारते ही लोग आपके बीते हुए कड़े संघर्ष को भूलकर आपको 'कायर' या 'अयोग्य' घोषित कर देते हैं।

अदृश्य संघर्ष (कंटकाकीर्ण राहें): कांटों से भरी जिन राहों पर चलकर आप यहाँ तक पहुँचे, जो रातें आपने जागकर बिताईं, वह दर्द किसी को दिखाई नहीं देता। लोग केवल आपकी अंतिम विफलता को देखते हैं।

इस परिस्थिति और लोक-व्यवहार (दुनिया के रवैये) को महाकवि भर्तृहरि ने अपने 'नीतिशतकम्' में एक बहुत ही सटीक श्लोक के माध्यम से समझाया है:

"प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,

प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,

प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ती॥"

श्लोक का अर्थ (Meaning):

अधम (नीच) लोग: विघ्नों और बाधाओं के डर से किसी कार्य को शुरू ही नहीं करते (कायरता के डर से)।

मध्यम लोग: कार्य तो शुरू कर देते हैं, लेकिन जैसे ही रास्ते में रुकावटें या पराभव आता है, वे बीच में ही रुक जाते हैं।

उत्तम लोग: कांटों से भरी राहें (कंटकाकीर्ण राहें) और बार-बार मिलने वाली असफलताओं के बावजूद, जो कार्य उन्होंने हाथ में लिया है, उसे तब तक नहीं छोड़ते जब तक सफलता न मिल जाए।

3. 'वाग्विहीन' और 'दुनिया के तानों' पर -

जब इंसान हारता है, तो उसके सारे गुण और उसकी बातें समाज की नजर में बेकार हो जाती हैं। पंचतंत्र में कहा गया है:

"यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः।

यस्यार्थाः स पुमांल्लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः॥"

श्लोक का अर्थ (Meaning):

जिसके पास सफलता या धन है, वही इस संसार में बुद्धिमान (पण्डित) और वीर माना जाता है। पराभव (हार) के क्षण में व्यक्ति कितना भी ज्ञानी हो, लोग उसे सुनना बंद कर देते हैं और वह 'वाग्विहीन' होने पर मजबूर हो जाता है।

निष्कर्ष: यह पद मनुष्य को सचेत करता है कि दुनिया का काम केवल परिणाम देखकर न्याय करना है। इसलिए, अपनी कंटकाकीर्ण (कांटों भरी) राहों पर बिना रुके चलते रहना ही एकमात्र विकल्प है, ताकि दुनिया को आपको कायर कहने का मौका न मिले।

कल्पना कर उस विषमता की,

और उठ खड़ा हो कर्मक्षेत्र में।

मौन गर्जना से हर लें,

तू उदासीनता मन की।।५।।

यह पद मनुष्य को मानसिक अवसाद और निराशा (उदासीनता) से बाहर निकलकर पूरी शक्ति के साथ दोबारा प्रयास करने की प्रेरणा देता है। कवि कह रहे हैं कि जीवन की कठिन परिस्थितियों (विषमता) की कल्पना करके डरो मत, बल्कि सचेत हो जाओ और अपने कर्मक्षेत्र (Battlefield of actions) में उठ खड़े हो जाओ। अपने भीतर एक ऐसी शांत लेकिन शक्तिशाली प्रतिज्ञा (मौन गर्जना) पैदा करो जो मन के आलस्य और उदासी को पूरी तरह नष्ट कर दे।

1. पद की विस्तृत व्याख्या (Explanation)

विषमता की कल्पना: जीवन हमेशा एक जैसा नहीं रहता। आने वाली कठिनाइयों या विषमताओं का पहले से ही मानसिक आकलन कर लेना चाहिए ताकि जब वे सामने आएं, तो हम टूटें नहीं।

कर्मक्षेत्र में उठ खड़ा होना: केवल सोचने या चिंता करने से परिस्थितियाँ नहीं बदलतीं। समस्याओं का एकमात्र समाधान है—सक्रिय होकर अपने कर्म में जुट जाना।

मौन गर्जना: इसका अर्थ है बिना शोर मचाए, भीतर ही भीतर एक दृढ़ संकल्प (Willpower) पैदा करना। सफलता की तैयारी इतनी खामोशी से करो कि तुम्हारी मेहनत ही तुम्हारी गर्जना बन जाए।

उदासीनता का नाश: जब व्यक्ति पूरी ऊर्जा के साथ कर्म में लग जाता है, तो मन की निराशा, अवसाद और उदासीनता अपने आप गायब हो जाती है।

इस पद के दोनों मुख्य तत्वों—**'कर्मक्षेत्र में उठना'** और **'उदासीनता/आलस्य को छोड़ना'**—को समझाने के लिए शास्त्रों के ये दो श्लोक :-

उदाहरण १: कर्मक्षेत्र और पुरुषार्थ पर (श्रीमद्भगवद्गीता)

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को ठीक इसी प्रकार की मानसिक उदासीनता और मोह से जगाने के लिए गीता (अध्याय २, श्लोक ३) में कहा था:

"क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप॥"

अर्थ: हे अर्जुन! इस नपुंसकता (कायरता या उदासीनता) को मत प्राप्त हो, यह तुम्हारे योग्य नहीं है। हे शत्रुओं को तपाने वाले! अपने हृदय की इस तुच्छ दुर्बलता को त्यागकर **कर्मक्षेत्र में युद्ध के लिए उठ खड़े हो (उत्तिष्ठ)**।

कवि के पद से जुड़ाव: यह श्लोक सीधे "उठ खड़ा हो कर्मक्षेत्र में" और "उदासीनता मन की" को त्यागने के भाव को हूबहू प्रकट करता है।

उदाहरण २: मौन गर्जना और उद्योग पर (हितोपदेश)

मन की उदासीनता को केवल इच्छाओं से नहीं, बल्कि शांत रहकर किए गए कड़े परिश्रम से ही जीता जा सकता है:

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥"

अर्थ: सभी कार्य केवल उद्यम (कठिन परिश्रम और कर्म) से ही सिद्ध होते हैं, केवल मन की इच्छाओं (मनोरथ) से नहीं। जिस प्रकार सोए हुए शेर (उदासीन सिंह) के मुंह में हिरण खुद प्रवेश नहीं करता, उसे भी उठकर शिकार करना पड़ता है।

कवि के पद से जुड़ाव: सिंह की शक्ति उसके भीतर होती है, लेकिन सोने से कुछ नहीं होगा। उसे भी अपनी उदासीनता छोड़कर 'मौन गर्जना' के साथ कर्मक्षेत्र में उतरना ही होगा।

3. जीवन का मूल मंत्र

यह पद हमें सिखाता है कि जब भी मन उदास हो या परिस्थितियाँ विपरीत (विषम) हों, तो रोने या बैठने के बजाय अपने काम की गति को दोगुना कर देना चाहिए। कर्म ही मन के अवसाद की सबसे बड़ी दवा है।

संकल्प -वपन कर,

इस धुंधले अवसाद में।

कायरता के हीन भाव को ,

ग़र्क कर साहसाब्धि में।

धैर्य की दीप ज्योति को,

प्रज्वलित कर तिमिरांचल मन में।।६।।

कवि अमन शुक्ला जी द्वारा रचित यह छठा पद (६) जीवन के सबसे घने अंधकार और मानसिक अवसाद से बाहर निकलने का एक महामंत्र है। इसमें कवि ने प्रतीकात्मक शब्दों (Metaphors) जैसे 'संकल्प-वपन', 'साहसाब्धि', और 'तिमिरांचल मन' का प्रयोग करके मनुष्य को अपनी खोई हुई इच्छाशक्ति को दोबारा जगाने का संदेश दिया है।

1. पद की शब्दशः एवं विस्तृत व्याख्या (Detailed Explanation)

"संकल्प-वपन कर, इस धुंधले अवसाद में"

अर्थ: 'वपन' का अर्थ होता है बीज बोना (Sowing a seed)। जब जीवन में असफलता के कारण चारों ओर 'धुंधला अवसाद' (धुंध जैसी निराशा या डिप्रेशन) छाया हो, जहाँ आगे का रास्ता न दिख रहा हो, उस कठिन समय में अपने मन में निराशा के बजाय एक नए 'संकल्प का बीज' बोओ।

"कायरता के हीन भाव को, ग़र्क कर साहसाब्धि में"

अर्थ: 'ग़र्क' का अर्थ है डुबो देना, और 'साहसाब्धि' दो शब्दों से बना है–साहस + अब्धि (अब्धि यानी समुद्र/सागर)। कवि कहते हैं कि विपरीत परिस्थितियों को देखकर मन में जो डर या कायरता का 'हीन भाव' (Inferiority complex) पैदा हो गया है, उसे अपने भीतर छिपे 'साहस के महासागर' में ले जाकर पूरी तरह से डुबो (नष्ट कर) दो।

"धैर्य की दीप ज्योति को, प्रज्वलित कर तिमिरांचल मन में"

अर्थ: 'तिमिरांचल' का अर्थ है अंधकार से घिरा हुआ आँचल या क्षेत्र। निराशा के कारण हमारा मन अंधकारमय (तिमिरांचल) हो जाता है। कवि का आह्वान है कि इस मानसिक अंधकार को दूर करने के लिए अपने भीतर 'धैर्य' (Patience) का दीपक जलाओ, क्योंकि धैर्य ही वह रोशनी है जो मुश्किल वक्त में सही रास्ता दिखाती है।

2. समानांतर शास्त्रीय श्लोक (Sanskrit Shloka Examples)

अमन शुक्ला जी के इस पद के तीन मुख्य स्तंभ हैं: **संकल्प (Determination), साहस का सागर (Ocean of Courage), और धैर्य (Patience)**। इन तीनों भावों को दर्शाने वाले प्रसिद्ध शास्त्रीय श्लोक निम्नलिखित हैं:

उदाहरण १: साहस और धैर्य से अंधकार को जीतने पर (भर्तृहरि नीतिशतकम्)

जब कोई व्यक्ति साहस के सागर में उतरता है और धैर्य का दीपक जलाता है, तो परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी अंधकारमय हों, वह विचलित नहीं होता:

> **"निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,**
> **लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।**
> **अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,**
> **न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥"**

श्लोक का अर्थ: नीति में निपुण लोग चाहे निंदा करें या प्रशंसा, धन (सफलता) आए या इच्छानुसार चली जाए, मृत्यु आज ही हो या युगों के बाद—जो 'धीर' (धैर्यवान) पुरुष होते हैं, वे अपने न्याय के मार्ग (संकल्प पथ) से एक कदम भी पीछे नहीं हटते।

भाव साम्य: अमन जी के 'धैर्य की दीप ज्योति' और 'साहसाब्धि' का हुबहू रूप इस श्लोक के 'धीराः' (धैर्यवान और साहसी व्यक्ति) में दिखाई देता है, जो अवसाद के धुंधलके में भी अडिग रहते हैं।

उदाहरण २: मन के अंधकार (तिमिरांचल) में धैर्य के महत्व पर (चाणक्य नीति)

मन के अवसाद और कठिनाइयों के अंधकार को केवल धैर्य रूपी प्रकाश से ही पार किया जा सकता है:

> **"त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।**
> **ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्॥"**
> *(समानार्थी ओजस्वी श्लोक - उद्योग और धैर्य पर)*
>
> **"नास्ति उद्योगसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।"**

श्लोक का अर्थ: परिश्रम और दृढ़ संकल्प के समान इस संसार में कोई दूसरा मित्र नहीं है, क्योंकि इसके बल पर मनुष्य कभी भी अवसाद (नावसीदति - निराश होना या डूबना) में नहीं गिरता।

भाव साम्य: यह श्लोक 'संकल्प-वपन' के महत्व को स्थापित करता है कि यदि संकल्प का बीज बो दिया जाए, तो अवसाद का धुंधलका टिक नहीं सकता।

निष्कर्ष (Conclusion)

कवि अमन शुक्ला जी की ये पंक्तियाँ एक मानसिक पुनर्जन्म की तरह हैं। यह पद हमें सिखाता है कि जब बाहर की दुनिया में सब कुछ धुंधला और अंधकारमय लगे, तब बाहर रोशनी ढूंढने के बजाय अपने भीतर झांकना चाहिए। अपने भीतर के **साहस के समुद्र** में डर को डुबो देना और **धैर्य का दीपक** जलाकर नए **संकल्प** के साथ खड़े होना ही जीवन का वास्तविक पुरुषार्थ है।

एक दिन ऐसा आएगा,

पौध-पल्लवन हो जाएगा।

मन्द वायु के प्रवाह से,

दीप अग्नि वेदी बन क्लीवत्व मिटाएगा।

महामाई की अनुग्रह से,

निश्चय ही तू विजय श्री पाएगा।।७।।

यह सातवाँ पद (७) कवि अमन शुक्ला जी की इस अद्‌भुत कविता का चरम बिंदु (Climax) है। यह पद पूर्णतः ‘आशावाद’ (Optimism), ‘परिवर्तन’ (Transformation) और ‘दैवीय कृपा’ (Divine Grace) पर आधारित है। पिछले पदों में जिस ‘संकल्प-वपन’ (बीज बोने) की बात की गई थी, यहाँ कवि उस बीज के वृक्ष बनने और अंतिम विजय प्राप्त करने की फलश्रुति (Result) दिखा रहे हैं।

पद की शब्दशः एवं विस्तृत व्याख्या (Detailed Explanation)

"एक दिन ऐसा आएगा, पौध-पल्लवन हो जाएगा।"

अर्थ: 'पल्लवन' का अर्थ होता है नए पत्तों का आना या विस्तार होना (Blossoming/Growth)। कवि आश्वासन देते हैं कि अवसाद के दिनों में तुमने मन में जो 'संकल्प का बीज' बोया था, वह व्यर्थ नहीं जाएगा। निरंतर धैर्य रखने से एक दिन वह बीज अंकुरित होगा और पौधा बनकर लहलहा उठेगा। यानी तुम्हारे प्रयास सफल होने लगेंगे।

"मन्द वायु के प्रवाह से, दीप अग्नि वेदी बन क्लीवत्व मिटाएगा।"

अर्थ: 'क्लीवत्व' का अर्थ होता है कायरता, नपुंसकता या कमजोरी। 'अग्नि वेदी' वह पवित्र स्थान है जहाँ यज्ञ की विशाल अग्नि धधकती है। कवि एक बहुत सुंदर रूपक

(Metaphor) रख रहे हैं–जो धैर्य का दीपक तुमने अंधकार में जलाया था, समय आने पर अनुकूल परिस्थितियों की 'मंद हवा' (मन्द वायु) उसे बुझाएगी नहीं, बल्कि उस छोटी सी दीपक की लौ को एक विशाल 'यज्ञ की अग्नि' (अग्नि वेदी) में बदल देगी। यह प्रचंड तेज तुम्हारे भीतर की बची-खुची कायरता और कमजोरी (क्लीवत्व) को जलाकर राख कर देगा।

"महामाई की अनुग्रह से, निश्चय ही तू विजय श्री पाएगा।"

अर्थ: **'**अनुग्रह' का अर्थ है कृपा (Blessings/Grace) और 'विजय श्री' का अर्थ है परम सफलता या जीत। अमन जी कहते हैं कि जब मनुष्य अपना पूरा पुरुषार्थ (कर्म, धैर्य और साहस) झोंक देता है, तब उस पर आदिशक्ति 'महामाई' (माँ दुर्गा/प्रकृति की सर्वोच्च शक्ति) की कृपा बरसती है। उस दैवीय आशीर्वाद के बाद तुम्हारी सफलता निश्चित (निश्चय ही) हो जाती है।

समानांतर शातीय श्लोक (Sanskrit Shloka Examples)

अमन शुक्ला जी के इस पद के दो मुख्य संदेश हैं: कर्म का फल अवश्य मिलता है (धैर्य का फल) और दैवीय कृपा से असंभव भी संभव हो जाता है।

इन्हें स्पष्ट करने वाले दो महान संस्कृत श्लोक निम्नलिखित हैं:

उदाहरण १: समय आने पर फल मिलने और क्लीवत्व मिटने पर

(श्रीमद्भगवद्गीता)गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को 'क्लीवत्व' (कायरता) को त्यागने की बात कही थी, और अंत में यह भी स्थापित किया कि जो धीरज रखता है, उसकी विजय निश्चित है:

"यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥" (गीता १८.७८)

अर्थ: जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण (दैवीय कृपा/महामाई का अनुग्रह) हैं और जहाँ धनुर्धारी अर्जुन (पुरुषार्थ/कर्मक्षेत्र में खड़ा वीर) है, वहाँ लक्ष्मी, विजय, विभूति और अचल नीति निश्चित ही होती है–यह मेरा मत है।

भाव साम्य: अमन जी की अंतिम दो पंक्तियाँ इस श्लोक का आधुनिक हिंदी रूपांतरण हैं। जब मनुष्य का कर्म (धनुर्धारी अर्जुन) और दैवीय कृपा (महामाई) एक साथ मिलते हैं, तो 'विजय श्री' ध्रुव सत्य बन जाती है।

उदाहरण २: महामाई के अनुग्रह (कृपा) के प्रभाव पर (देवी महात्म्यम् / दुर्गा सप्तशती)आदिशक्ति की कृपा एक छोटे से दीपक को भी दावानल या अग्नि वेदी बना सकती है और मनुष्य के सारे दुखों को हर सकती है:

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥"

और माँ की कृपा पर प्रसिद्ध उक्ति:"

मूकं करोति वाचालं पगुं लङ्घयते गिरिम्।

यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥" (यहाँ माधव/दुर्गा दोनों ही परम सत्ता के रूप हैं)

उक्ति का अर्थ: जिनकी कृपा से गूँगा व्यक्ति भी बहुत बोलने लगता है और अपाहिज भी पर्वत को लांघ जाता है, उस परम सत्ता को मैं प्रणाम करता हूँ।

भाव साम्य: अमन जी ने जो कहा कि 'दीप अग्नि वेदी बन क्लीवत्व मिटाएगा', वह इसी दैवीय चमत्कार को दर्शाता है कि माँ की कृपा से एक कमजोर दीपक भी पूरी दुनिया को आलोकित करने वाली अग्नि बन सकता है।

तेरे विपद-पथ-गामी चरण,

तब आदर्श बन जायेंगे।

विजयोपरांत यह संसार करेगा तेरा यशोगान,
शौर्य की उस छांव के लिए,तू कर बाण -संधान।।८।।

यह आठवाँ पद (८) कवि अमन शुक्ला जी की इस ओजस्वी और प्रेरणादायक कविता का भव्य **उपसंहार** (Grand Finale) है। पिछले पदों में जिस **संघर्ष**, **संकल्प**, **धैर्य** और विजय की यात्रा का वर्णन था, यह पद उस यात्रा के अंतिम परिणाम यानी '**अमर कीर्ति**' (Legacy), '**लोक-सम्मान**' और '**निरंतर पुरुषार्थ**' को समर्पित है।

पद की शब्दशः एवं विस्तृत व्याख्या (Detailed Explanation)

”तेरे विपद-पथ-गामी चरण, तब आदर्श बन जायेंगे।“

अर्थ: 'विपद-पथ-गामी चरण' का अर्थ है विपत्ति, संकट और कठिनाइयों से भरे रास्तों पर चलने वाले पैर। कवि कहते हैं कि जब तुम अंततः सफल हो जाओगे, तब लोग केवल तुम्हारी सफलता को नहीं सराहेंगे। बल्कि अतीत में जिन दुखों, कांटों और संकटों से भरे रास्तों पर तुम्हारे पैर चले थे, वे संघर्ष के रास्ते आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक और एक 'आदर्श' (Role Model) बन जाएंगे। लोग तुम्हारी संघर्ष-गाथा की मिसाल देंगे।

“विजयोपरांत यह संसार करेगा तेरा यशोगान,”

अर्थ: 'विजयोपरांत' यानी विजय के बाद (After Victory)। यह इस दुनिया का सनातन नियम है कि वह केवल विजेता के सामने झुकती है। जैसे ही तुम अपनी कठिन राहों को पार करके विजय प्राप्त कर लोगे, यही संसार जो कभी तुम्हें कायर ठहरा रहा था (जैसा पद ४ में कहा गया था), वह पूरी तरह बदलकर तुम्हारी तारीफों के पुल बांधेगा और तुम्हारा 'यशोगान' (Glory/Praise) करेगा।

"शौर्य की उस छांव के लिए, तू कर बाण-संधान।"

अर्थ: 'बाण-संधान' का अर्थ है धनुष पर तीर चढ़ाना या अपने लक्ष्य पर अचूक निशाना साधना। 'शौर्य की छांव' का अर्थ है वह गौरवमयी स्थिति जहाँ तुम्हें और तुम्हारे अपनों को सुरक्षा, सम्मान और शांति मिलती है। कवि अंतिम आह्वान करते हैं कि भविष्य के उस गौरव, सम्मान और शौर्य की शीतल छांव को पाने के लिए, आज वर्तमान में अपनी पूरी शक्ति समेटो और अपने लक्ष्य पर अर्जुन की तरह निशाना साधो (बाण-संधान करो), बिना रुके युद्ध करो।2.

समानांतर शास्त्रीय श्लोक (Sanskrit Shloka Examples)

अमन शुक्ला जी के इस पद के दो मुख्य संदेश हैं: संसार केवल विजेताओं और वीरों की पूजा करता है तथा वीर पुरुष अपने पुरुषार्थ (बाण-संधान) से अपना भाग्य खुद बदलते हैं।

इन्हें स्पष्ट करने वाले दो प्रसिद्ध शास्त्रीय श्लोक निम्नलिखित हैं:

उदाहरण १: वीरों के यशोगान और पुरुषार्थ पर (वीर भोग्या वसुंधरा - सुभाषित)संसार में केवल उन्हीं का यश अमर रहता है जो कठिनाइयों से लड़कर अपनी वीरता (शौर्य) सिद्ध करते हैं:

"उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः॥"

श्लोक का अर्थ: जो उद्योगी (परिश्रमी) और पुरुषों में सिंह के समान वीर हैं, लक्ष्मी (विजयश्री) उन्हीं के पास आती है। "सब कुछ भाग्य से

मिलता है" ऐसा तो केवल कायर लोग कहते हैं। इसलिए भाग्य के भरोसे बैठना छोड़कर, अपनी आत्मशक्ति से पुरुषार्थ करो (बाण-संधान करो)। यदि प्रयास करने पर भी सफलता न मिले, तो देखना चाहिए कि कमी कहाँ रह गई।

भाव साम्य: अमन जी का 'बाण-संधान' करने का संदेश सीधे इस श्लोक के 'कुरु पौरुषमात्मशक्त्या' (अपनी पूरी शक्ति से पुरुषार्थ करो) के भाव को प्रकट करता है, जिससे अंततः 'यशोगान' मिलता है।

उदाहरण २: महापुरुषों के संकटपूर्ण मार्ग (विपद-पथ) के आदर्श बनने पर (महाभारत / नीतिवचन)जब एक श्रेष्ठ व्यक्ति संकटों को पार करके इतिहास रचता है, तो उसका रास्ता सबके लिए आदर्श बन जाता है:

"तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना,
नासावृषिर्यस्य मतं न भिन्नम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां,
महाजनो येन गतः स पन्थाः॥" (महाभारत, वनपर्व)

श्लोक का अर्थ: धर्म और सत्य का मार्ग बहुत सूक्ष्म और गुफा में छिपा है (यानी बहुत कठिन है)। ऐसी स्थिति में सबसे सही रास्ता वह है, जिस रास्ते से 'महाजन' (महान और श्रेष्ठ लोग अपने विपद-पथ पर चलते हुए) गुजरे हैं।

भाव साम्य: अमन शुक्ला जी की पंक्ति "तेरे विपद-पथ-गामी चरण, तब आदर्श बन जायेंगे" इसी शाश्वत सत्य को दोहराती है कि इतिहास गवाह है, महापुरुषों के कठिन संघर्ष के रास्ते ही बाद में दुनिया के लिए 'पन्थाः' (आदर्श मार्ग) बनते हैं।

-:महा निष्कर्ष:-

कवि **अमन शुक्ला** जी द्वारा रचित कविता **'तिमिरांचल से आलोक तक'** मानव जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी—'अवसाद और मानसिक हार'—से लेकर परम गौरव की प्राप्ति तक की एक महा-गाथा है। शीर्षक स्वयं में स्पष्ट करता है कि यह यात्रा 'तिमिरांचल' (अंधकार के अंचल/डिप्रेशन) से शुरू होकर 'आलोक' (सफलता और ज्ञान के प्रकाश) पर समाप्त होती है।

पूरी कविता का **महा-निष्कर्ष (Grand Conclusion)** निम्नलिखित चार मुख्य स्तंभों में समझा जा सकता है:

१. युद्ध अपरिहार्य है (प्रयास को टालना आत्मघाती है)

कविता की शुरुआत ही एक परम सत्य से होती है कि जीवन में संघर्ष या **'युद्ध का कोई विकल्प नहीं'** है। जो व्यक्ति परिस्थितियों से डरकर अपने आज के संघर्ष को कल पर टाल देता है, वह अंततः समाज की ठोकरों में रह जाता है। अमन जी का निष्कर्ष है कि सही समय पर उठाया गया कदम (आज लड़ा तो) ही व्यक्ति को 'वैभव' दिलाता है, जबकि देर से जागने वाले के हिस्से केवल पछतावा आता है।

२. संसार केवल परिणाम देखता है, प्रक्रिया नहीं

पद २, ३ और ४ इस दुनिया के बेहद क्रूर और व्यावहारिक चेहरे को उजागर करते हैं। कवि निष्कर्ष निकालते हैं कि इस उदासीन संसार को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप परिस्थितियों के जाल में सही थे या गलत। यदि आप हार गए (**पराभव का क्षण**), तो आपकी **कांटों भरी राहें (कंटकाकीर्ण राहें)** किसी को दिखाई नहीं देंगी। दुनिया केवल आपकी 'विजय की लाली' देखना चाहती है, और सफलता न मिलने पर वही समाज जो आपकी परवाह नहीं करता, आपको **'कायर'** ठहराने में एक पल भी नहीं लगाएगा।

३. अवसाद की एकमात्र दवा 'कर्म' और 'मौन संकल्प' है

कविता का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ (Turning Point) पाँचवें और छठे पद में आता है। जब चारों ओर धुंधला अवसाद हो, तब बाहर किसी मसीहा को ढूंढने के बजाय अपने भीतर **'संकल्प का बीज' (संकल्प-वपन)** बोना पड़ता है। कवि का महा-निष्कर्ष यह है कि मन की उदासी को किसी बाहरी सहारे से नहीं, बल्कि अपने भीतर की **'मौन गर्जना'** और साहस के महासागर (**साहसाब्धि**) से ही मिटाया जा सकता है। कर्मक्षेत्र में चुपचाप उठ खड़े होना ही अवसाद पर विजय पाने का एकमात्र रास्ता है।

४. पुरुषार्थ और दैवीय कृपा का संगम ही अंतिम विजय है

कविता के अंतिम भाग (पद ७ और ८) में कवि एक महान आशावाद की स्थापना करते हैं। यदि मनुष्य अपना धैर्य बनाए रखे, तो एक छोटा सा

दीपक भी वक्त आने पर **'अग्नि वेदी'** बनकर आंतरिक कमजोरी (क्लीवत्व) को जला डालता है। निष्कर्ष यह है कि जब मनुष्य अपना शत-प्रतिशत पुरुषार्थ झोंक देता है, तब **'महामाई का अनुग्रह'** (प्रकृति/ईश्वर की कृपा) स्वतः प्राप्त होता है। इसके बाद न केवल विजय मिलती है, बल्कि कल तक जो पैर कांटों पर लहूलुहान हो रहे थे, वे आने वाली पीढ़ियों के लिए **'आदर्श'** बन जाते हैं और वही समाज आपका **'यशोगान'** करने को विवश हो जाता है।

🌟 कविता का अंतिम संदेश (The Ultimate Message)

"अकर्मण्यता मृत्यु है और पुरुषार्थ ही जीवन है।"

अमन शुक्ला जी की यह कविता हर उस व्यक्ति के लिए आधुनिक 'गीता' के समान है जो जीवन की विषमताओं से हारकर बैठ गया है। इसका महा-निष्कर्ष यही है कि **तुम्हारी आज की खामोश तैयारी और बाण-संधान (लक्ष्य पर एकाग्रता) ही कल के इतिहास का निर्माण करेगी। दुनिया के तानों से मत डरो, अपने भीतर धैर्य का दीप जलाओ और कर्मक्षेत्र में उतर जाओ, क्योंकि विजय सुनिश्चित है।**